# पंचम् अध्याय

# शिक्षाविद् व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में

Estelar

# शिक्षाविद् व बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक के रूप में

शिक्षा के क्षेत्र में मूर्धन्य स्थान रखने वाले महान व्यक्ति पं0 मदन मोहन मालवीय के जन्म से भारत भूमि अलंकृत हुई है।[1] इन्होंने इण्टर की परीक्षा इलाहाबाद के 'म्योर सेन्ट्रल कॉलिज' से 1881 में उत्तीर्ण की तत्पश्चात् 1884 में बी0ए0 की परीक्षा पास की। विषम आर्थिक स्थितियों तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण उन्होंने अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया।[2]

मालवीय जी 1887 तक शिक्षण कार्य करते रहे। अध्यापक के रूप में मालवीय जी सफल रहे। उनकी सफलता का प्रमुख कारण यह था कि वे सदा अपने पठनीय विषय भली–भांति तैयार करके जाते थे। उचित उदाहरणों, दृष्टान्तों, उद्धरणों और कथाओं से समृद्ध उनकी मधुर वाणी से उनके पाठ इतने रोचक और आकर्षक हो जाते थे कि जो उनसे कोई पाठ एक बार पढ़ लेता था उसे अपने घर पर पढ़ने अथवा दुहराने की आवश्यकता नहीं होती थी। अपने चरित्र, विद्या, आकर्षक व्यक्तित्व और सहानुभूतिपूर्ण व कोमल व्यवहार के कारण मालवीय जी के छात्र उनका अत्यधिक आदर और सम्मान करते थे।[3]

शिक्षण कार्य के दौरान उन्हें अनुभूति हुई कि शिक्षा पद्धति एवं शिक्षा सिद्धान्तों में सुधार की सम्भावना है। वे शिक्षा को अधिक संसाधनपूर्ण

Estelar

और गरिमामय बनाने के पक्षधर थे। इसीलिए उन्होंने शिक्षण कार्य छोड़ने के पश्चात् भी छात्रों के हित में अनेक कार्य किये, यथा प्रयाग में भारती भवन पुस्तकालय की स्थापना एवं पंडित जी के प्रयत्न से ही प्रयाग में एक हिन्दू बोर्डिंग हाऊस बना है।[4] इस छात्रावास का नाम यद्यपि 'मैकडोनल हिन्दू छात्रावास' रखा गया तथापि यह 'मालवीय जी का बोर्डिंग हाउस' के नाम से ही प्रसिद्ध था।[5]

यद्यपि पं0 मदन मोहन मालवीय ने विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–2 रूप में अपना योगदान दिया, जैसे– पत्रकारिता के क्षेत्र में, वकालत के क्षेत्र में, समाज सुधार के क्षेत्र में, दलित वर्ग के उद्धारक के रूप में, उदार हिन्दू धर्म के प्रवर्तक के रूप में, हिन्दी प्रेमी के रूप में, गौ–सेवक के रूप में, विधान सभाओं में, राष्ट्रवादी दल की स्थापना के क्षेत्र में, स्वदेशी के प्रचारक के रूप में आदि–आदि। फिर भी महामना मालवीय के 86 वर्ष के जीवन का सर्वाधिक बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना है। यह विश्व इतिहास की अनोखी घटना है कि बी0ए0 पास युवक अपने छात्र जीवन की कल्पना और स्वप्न का पूरा करने में सफल हुआ। छात्र जीवन में वे स्वप्न देखते थे कि प्रयाग से काशी तक गंगा तट पर एक विश्वविद्यालय स्थापित हो, जिसमें विश्व भर के छात्र पढ़ने को आयें और उसमें ऋषि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द सदृश धर्म प्रचारक उत्पन्न हों।[6] सर तेज बहादुर सप्रू ने ठीक ही कहा है कि यदि उन्होंने इस विश्वविद्यालय की स्थापना करने तथा उसे आज की स्थिति में पहुंचाने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं किया होता तो भी भारत के इतिहास में उनका नाम अमर होता।[7] काशी हिन्दू विश्वविद्यालय पूर्णतः पंडित मदन मोहन मालवीय की ही सृष्टि है। जब मालवीय जी म्योर सेन्ट्रल कॉलेज के छात्र थे तो एक परिवर्तन उन्हें बड़ा व्यथित करता थां जो



Estelar

भारतीय युवक उच्च शिक्षा के लिए विदेश जाते थे, वे अपने देश की सभ्यता और संस्कार वितृष्णा भूल जाते थे। उनके दिलों में धर्म के प्रति वितृष्णा उत्पन्न हो जाती थी। यह बहुत दारूण बात थी।[8] इसके अतिरिक्त सन् 1884 में अंग्रेजों की प्रेरणा से मुसलमानों का हिन्दुओं से अलग करने तथा कट्टरपंथी मुस्लिमम नवजवान तैयार करने के उद्देश्य से सर सैय्यद अहमद खान ने सन् 1889 में अलीगढ़ विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप यह स्वाभाविक था कि हिन्दुओं का मन भी हिन्दू धर्म की रक्षा और हिन्दू समाज की भाषा तथा धर्म के लिए सब कुछ बलिदान करने की भावना रखने वाले नवयुवकों का निर्माण किया जाए।[9] बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, लाहौर तथा प्रयाग में ब्रिटिश सरकार द्वारा विश्वविद्यालयों की स्थापना किये जाने के बाद और 1904 ई0 में भारतीय विश्वविद्यालयों की कार्य पद्धति का परीक्षण करने के पश्चात् एक ऐसे राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना नितान्त आवश्यक हो गयी जहाँ भारतीय संस्कृति और भारतीय परम्परा के संस्कारों के साथ अर्वाचीन और प्राचीन तथा पूर्वी और पश्चिमी सभी कलाओं, शास्त्रों और विज्ञानों की शिक्षा दी जा सके।[10] इस विश्वविद्यालय की स्थापना का बीड़ा मालवीय जी ने उठाया, परन्तु यह कार्य इतना आसान न था।[11] इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए महामना मालवीय जी को प्रभावशाली ब्रिटिश सुधारक एवं थियोसोफिकल सोसाइटी की संस्थापक ऐनी बेसेन्ट से सहयोग मिला, जिन्होंने सन् 1931 में अपना सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज मालवीय जी को सौंप दिया।[12] जिसे बाद में मदन मोहन मालवीय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के रूप में परिणित किया।[13]

सर्वप्रथम सन् 1904 में मालवीय जी ने काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापना के सम्बन्ध में अपने मित्र–सम्बन्धियों से चर्चा की।



Estelar

पिता के समर्थन से उनकी इस भावना को बहुत बल मिला। पण्डित जी का वकालत का कैरियर अपने चरम पर चल रहा था तथा सभी जगह उनकी बहुत सम्मानित व श्रेष्ठ वकील माना जाता था, किन्तु मालवीय जी के मन–मस्तिष्क पर विश्वविद्यालय की स्थापना की धुन सवार हो गयी। अतः अत्यन्त विचार–मंथन करने के पश्चात् मालवीय जी ने सन् 1905 में वकालत छोड़ दी व विश्वविद्यालय स्थापना के कार्य में जुट गये।[14]

मालवीय जी 31 दिसम्बर, सन् 1905 को बरार के बी0 एन0 महाजन की अध्यक्षता में कांग्रेस महासभा अधिवेशन में अनेक विद्वानों और शिक्षाशास्त्रियों के समक्ष विश्वविद्यालय की योजना प्रस्तुत की गई। तदुपरान्त जनवरी, सन् 1906 को कांग्रेस अधिवेशन में इसे प्रस्तावित किया गया। दोनों की अधिवेशनों में इस प्रस्ताव का स्वागत हुआ। वर्ष 1906 में ही कुम्भ के पावन पर्व पर अनेक विद्वान सन्तों ने जगद्गुरू शंकराचार्य की अध्यक्षता मे इस प्रस्ताव को समर्थन दिया। वहां विश्वविद्यालय के निम्न उद्देश्य पारित हुए–

1. भारतीय विश्वविद्यालयों की श्रेणी में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए। इसके उद्देश्य निम्न हों–

अ) सनातन धर्म के सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार किया जाए।

ब) संस्कृत भाषा और साहित्य के अध्ययन में जनजागृति।

स) हिन्दी भाषा में वैज्ञानिक तथा शिल्पकला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार में सहयोग।

2. विश्वविद्यालय को निम्न संस्थाओं में वर्गीकृत करना चाहिए–

अ) **वैदिक विद्यालय–** जहां वेद, वेदांग, स्मृति, शास्त्र, इतिहास, पुराण आदि की शिक्षा दी जा सके। ज्योतिष विभाग व अन्तरिक्ष विद्या सम्बन्धी वेधशाला का निर्माण किया जाए।



Estelar

ब) **आयुर्वेदिक विद्यालय–** जिसमें प्रयोगशाला सहित वनस्पति शास्त्र के अध्ययन के लिए उद्यान की सुविधा भी हो। एक चिकित्सालय और पशु चिकित्सालय की स्थापना हो सके।

स) **स्थापात्य वेद व अर्थशास्त्र–** इसमें तीन विभाग होने चाहिए।

भौतिकी विभाग,

प्रायोगिक और आविष्कारक प्रयोगशाला,

वैद्युतिकी तथा तकनीकी कार्य सिखाने के लिए आवश्यक सुविधाएं।

द) **रसायन विभाग–** इसमें प्रायोगिक और आविष्कारक प्रयोगशाला में रासायनिक द्रव्य बनाने की शिक्षा के लिए यन्त्रालय की स्थापना।

य) **शिल्प कला विभाग–** इसमें दैनिक व्यवहार के कार्य में आने वाली वस्तुओं का निर्माण हो। इसी विभाग में भू–गर्भ शास्त्र, खनिज शास्त्र व धातु शास्त्र की शिक्षा दी जाए।

र) **कृषि विभाग–** इस विभाग में प्रयोगात्मक और सैद्धान्तिक शिक्षाओं को कृषि के नवीन अनुभवों पर दिया जाए।

ल) गन्धर्ववेद तथा अन्य ललित कलाओं का विद्यालय।

ह) **भाषा विद्यालय–** इसमें अंग्रेजी, जर्मन और अन्य विदेशी भाषाओं को भी पढ़ाया जाए। इससे भारतीय भाषाओं के साहित्य में नये प्रयोग और उपलब्धियां होंगी। विज्ञान और कला के नए आविष्कारों के विकास में वृद्धि की सम्भावना बनी रहेगी।

3. इस विश्वविद्यालय का धर्म सम्बन्धी प्रत्येक कार्य उन हिन्दुओं के संरक्षण में होना चाहिए, जो वेद, पुराणों द्वारा इंगित सनातन धर्म में आस्था रखते हैं।

वैदिक विद्यालय में प्रवेश वर्णाश्रम व्यवस्था के आधार पर हो।

Estelar

वैदिक विद्यालय के अलावा अन्य सभी विद्यालयों में प्रत्येक धर्म और जाति के लोगों को प्रवेश मिले।

4. मदन मोहन मालवीय जी के संरक्षण में एक समिति बनाई जाए, जिसमें सदस्यों को सम्मिलित किया जाए, ताकि समिति विश्वविद्यालय की योजना को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाए।

बनारस टाऊन हॉल में हुए अधिवेशन में जितने भी सदस्य उपस्थित थे, वे सब इस समिति के सदस्य बनें।

5. विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एकत्र हुए धन को काशी नरेश मुंशी माधोलाल को पास पहुंचाएं। माननीय माधोलाल जी इस धन को ''बैंक ऑफ बंगाल, बनारस'' में जमा कर दें। फिर भी इस सम्बन्ध में समिति के किसी अग्रिम आदेश की प्रतीक्षा करें।[15]

पंडित जी ने सन् 1907 में काशी नरेश की अध्यक्षता में हुई काशी की सभा में हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने का नियमित प्रस्ताव प्रस्तुत किया। कई सज्जनों ने इस प्रस्ताव की पूर्णता में शंका व्यक्त की। स्वयं काशी नरेश ने विश्वविद्यालय की स्थापना में संदेह किया। इन सन्देहों के होते हुए भी प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। प्रस्ताव की स्वीकृति से मालवीय जी को दृढ़ता मिली। वइ इस योजना को कार्यान्वित करने की कार्यवाही में जुट गए।[16] काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्णय हो जाने के पश्चात् मालवीय जी ने 1911 में काशी से प्रस्थान से पूर्व एक करोड़ बार गायत्री मन्त्र का जाप किया और उसके साथ 'गजेन्द्र मोक्ष' का न जाने कितनी बार पाठ किया। आशाज्योति के प्रदीप्त हो जाने पर वे अपना थैला उठाकर प्रस्थान करने के लिए पिता के पास आर्शीवाद लेने के लिए पहुँचे। पिता ने पुत्र को छाती से लगा लिया, आँखों में आँसू भर कर गृहत्यागी पुत्र को पुलकित हृदय से आर्शीवाद दिया और विश्वविद्यालय के लिए 50 रूपये का

Estelar

दान भी अपनी गाढ़ी कमाई से दिया। श्रद्धामयी माँ एवं स्नेहमयी भगिनी का भी आर्शीवाद लेकर इस महान तपस्वी ने एक महान उद्देश्य के लिए प्रयाग को सदा के लिए त्याग दिया और काशी विश्वविद्यालय को अपना घर बना लिया। बुद्ध के त्याग से क्या यह कम महान त्याग है?[17]

महामना मालवीय के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के प्रस्ताव के इस महान निर्णय की चर्चा सारे देश में समाचार पत्रों द्वारा फैल गयी थी और उनके समस्त शुभचिन्तक महामना के इस कार्य में सहयोग करने के लिए प्रयत्नशील हो गये। विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वाइसराय का चार्टर या मान्यता की आवश्यकता थी। हिन्दू विश्वविद्यालय को चार्टर दिलाने के प्रश्न ने देश भर को आन्दोलित और उत्तेजित कर दिया। शिमला की एक सभा में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने सिंह गर्जना करते हुए कहा–''चार्टर मिले या ना मिले, विश्वविद्यालय अवश्य स्थापित होगा।''[18] महामना जी ने इसको लक्ष्य करके कहा– ''चार्टर और विश्वविद्यालय दोनों ही प्राप्त करके रहूँगा।'' लाहौर और मुम्बई में भी यही ध्वनि गूँजी।[19] चार्टर के लिए जब महामना ने वायसराय की कौंसिल के शिक्षा सदस्य सर हरकोर्ट बटलर से भेंट की तो उन्होंने स्पष्ट भाषा मे कहा, ''सरकार आपको उस समय तक चार्टर देने की बात भी नहीं सोच सकती, जब तक आप विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने की बात रखते हैं। अंग्रेजी माध्यम रखिए, और चार्टर रखिए।'' अपनी बात को स्पष्ट करते हुए बटलर ने कहा– जब आप अंग्रेजी में पढ़ाते हैं, तब तक हैं पता रहता है कि आप क्या पढ़ा रहे हैं और अगली पीढ़ी क्या सोचेगी और क्या बनेगी। परन्तु जब आप अंग्रेजी छोड़कर हिन्दी में पढ़ाने लगते हैं, तब हम अन्धेरे में रहते हैं और आपको ठीक ठाक जान नहीं पाते। हम ब्रिटिश साम्राज्य को खतरे में नही डालना चाहते।



Estelar

बटलर के इस कथन के बाद मालवीय जी अनिच्छा के साथ अंग्रेजी के माध्यम से शिक्षा देना स्वीकार कर लिया। फिर बटलर ने शीघ्र ही एक विशेष एक्ट बनाकर विश्वविद्यालय को चार्टर देने की बात का आश्वासन दे दिया। आर्थिक सहायता देने का भी वचन दिया। बटलर से भेंट करने के बाद जब महामना वापस आए तो उनके चेहरे पर विजय का उल्लास न था अपितु पराजय की खिन्नता और आत्म–ग्लानि थी। बाबू शिवदास गुप्त द्वार पर ही उनकी प्रतीक्षा में बैठे थे। महामना का उदास मुख देखकर उन्होंने सोचा कि बटलर ने महामना का अपमान किया है। उन्होनें आवेश में पूछा–''बाबू आपको क्या हुआ? आप उदास जान पड़ते हैं।'' महामना ने अपने आन्तरिक विषाद को छुपाते हुए कहा, कुछ नहीं चार्टर मिल गया है, परन्तु शिक्षा का माध्यम हिन्दी नहीं, अंग्रेजी होगा।'' महामना ने हिन्दी के माध्यम के प्रश्न को स्थगित कर दिया। यदि महामना माध्यम का आग्रह रखते तो भारतीय शिक्षा–व्यवस्था और प्रणाली में एक महती क्रान्ति कर देते। महामना सुधारवादी थे और आहिस्ता–2 कदम उठाने वाले थे। अतः महामना ने निश्चय किया कि भले ही शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी में रखना पड़े हम देश के लिए हिन्दी और हिन्दुत्वनिष्ठ देशभक्त नौजवानों के निर्माण के उद्देश्य को पूरा करके रहेंगे।

जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय विधेयक पारित हुआ तो उसकी अन्तिम स्वीकृति के अवसर पर मालवीय जी ने एक और कालजयी भाषण दिया था। उन्होंने कहा था– ''धर्म की सजीव शक्ति पर मेरा अटूट विश्वास है। धार्मिक प्राणी ही मानवीय गुणों से शोभित होता है। यहां उपस्थित सभी सज्जन धार्मिक शिक्षा के पक्षधर हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है। हमारे शिक्षा संस्थानों में धार्मिक शिक्षा की न्यूनता का आभास स्पष्ट हो रहा है। पिछले साठ वर्षों में ब्रिटिश सरकार ने जो शिक्षा प्रणाली



Estelar

चलाई, उसमें भी धार्मिक शिक्षा का पूर्ण अभाव रहा। इसके जो परिणाम हुए, उनसे हम सब परिचित हैं। मुझे अपार सन्तोष है कि इस प्रस्तावित विश्वविद्यालय से इन कमियों को दूर करने का हमें उचित अवसर मिल रहा है। यह भी बड़े हर्ष की बात है कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना भारत के उस प्राचीन नगर में हो रही है, जो प्राचीनकाल से विद्या का केन्द्र रहा है। इस विश्वविद्यालय की धार्मिक शिक्षा का प्रभाव अवश्य ही अन्य शिक्षा संस्थाओं पर पड़ेगा, ऐसा मेरा विश्वास है। सम्भवतः कुछ ही समय पश्चात् सरकार और जनता के मिले–जुले प्रयासों से इन महाविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को महत्वपूर्ण और आवश्यक कर दिया जाएगा। मैं इस आशा के साथ अपना व्वक्तव्य समाप्त करता हूँ कि शिक्षा के क्षेत्र में अद्‌भुत जीवन और प्रकाश का यह केन्द्र अपने गर्भ से ऐसे छात्रों को जन्म देगा, जो बौद्धिक स्तर पर विश्व के अन्य देशों के छात्रों के समान श्रेष्ठ होंगे। वे सदाचारपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का भली–भांति उपयोग करेंगे।''[20]

हिन्दू विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय विश्व विद्यालय की मान्यता भी मिल गयी। परन्तु इसके लिए भूमि की बहुत आवश्यकता थी। काशी नरेश से भूमि देने की प्रार्थना करने पर उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया। काशी नरेश ने कहा–'पंडित जी जितना भी धन आपको चाहिए, हम देने को सहर्ष तैयार हैं, किन्तु उस भूमि को हम किसी भी स्थिति में नही देंगे। इस भूमि से हमें अपरिमित मोह है।'[21] पर महामना निराश नहीं हुए। एक दिन प्रातःकाल गंगा तट पर जहां काशी नरेश प्रतिदिन स्नान पूजा करते थे, महामना पहुंच गये एवं नरेश के पूजन के समय पौरोहित्य किया। जब दक्षिणा का समय आया तो महामना ने भूमि माँगी और काशी नरेश ने इस दृढ़ निश्चयी पुरोहित को मुस्कुराकर 5 वर्ग मील भूमि गंगा किनारे



Estelar

सौंप दी। महामना गदगद् हो गये। उन्होंने गंगा माता और भगवान का स्मरण कर उनका पूजन कर उन्हें धन्यवाद दिया।

मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए धन एकत्र करने के लिए अथक प्रयत्न किया तथा अपने उपनाम महामना को चरितार्थ किया। मालवीय जी ने विश्वविद्यालय के लिए चन्दा एकत्र करने के लिए भारत भ्रमण किया। मालवीय जी के भाषणों में गजब का जादू था। वे समाजों में भाषण करते और उनके मांगने पर श्रोता अपनी जेबें खाली कर देते और महिलाएं अपने जेवर उतारकर दे देती। कभी–2 उनको धन प्राप्त करने के लिए पौराहित्य भी करना पड़ता।

एक बार आचार्य कृपलानी ने विनोद में कहा कि हिन्दू विश्वविद्यालय का निर्माण एक भिखारी ने किाय है। मालवीय जी स्वयं कहा करते थे–

मरि जाऊँ माँगू नहिं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारने मोहि न आवे लाज।।[22]

महामना मालवीय जी द्वारा विद्या दान के रूप में धन एकत्र किये गये जाने की कुछ प्रमुख घटनाएं अग्रवत प्रस्तुत हैं–

जब मालवीय जी धन एकत्र करने के लिए निकलते थे तो वह प्रातः ही एक लक्ष्य बना लेते थे। उनकी प्रतिज्ञा होती थी कि जब तक वह निश्चित लक्ष्य की धनराशि एकत्र नहीं कर लेंगे, भोजन नहीं करेंगे। इस सम्बन्ध में अमृतसर में घटी उनके दृढ़ निश्चय की घटना बड़ी मनोरंजक है। एक दिन वह लक्ष्य निर्धारित करके अपने साथियों सहित अपने ठिकाने से सभी निकले। दोपहर के बाद एक व्यापारी के पास पहुंचे। व्यापारी ने उनका यथोचित सत्कार किया। मालवीय जी के साथ जितने भी



Estelar

व्यक्ति थे, सभी भूखे थे। व्यापारी ने उनसे भोजन का अनुरोध किया। मालवीय जी इन्कार करते हुए उस दिवस के लिए निर्धारित धनराशि एकत्र न होने की शर्त बतायी। व्यापारी मालवीय जी के संकल्प से अत्यन्त प्रभावित हुआ तथा हाथ जोड़कर बोला–''आप लोग भोजन करें। मैं वचन देता हूँ कि मैं आपकी लक्ष्य की शेष धनराशि देकर इस पवित्र कार्य में सम्मिलित हो सकूंगा।'' तत्काल व्यापारी ने शेष धनराशि का चैक दे दिया।[23]

धन एकत्र करने के प्रसंग में एक रोचक घटना हैदराबाद के नवाब से चंदा लेने की भी है, जो हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए एक कौड़ी देने के लिए भी तैयार नहीं थे। अथक निवेदन के बाद नवाब ने मालवीय जी की झोली में गुस्से में अपना एक जूता डाल दिया। मालवीय जी ने प्राप्त जूते की नीलामी की घटना समाचार–पत्र में प्रकाशित करा दी, जो नवाब के बहुत शर्मनाक थी। अन्ततः नवाब पर्याप्त धनराशि दे कर अपना जूता वापिस ले गये।[24]

कलकत्ते में महामना की भेंट दरभंगा नरेश रामेश्वर सिंह से हुई। नरेश कलकत्ते एक विराट सभा का सभापतित्व कर रहे थे। महामना का इस सभा का अलौकिक और दिव्य भाषण हुआ। श्रोता मुग्ध हो गए। मालवीयजी का भाषण इतना प्रभावशाली था कि मंच पर रूपये की वर्षा होने लगी। इस दृश्य और महामना के साथ पहली भेंट में हुई बातचीत में दरभंगा नरेश की भावनाओं को जगा दिया। सभापति पद से अन्तिम भाषण देते हुए दरभंगा नरेश ने घोषणा की कि वह हिन्दू विश्वविद्यालय को 25 लाख रूपये दान में देंगे। यह घोषणा अकल्पनीय और आशातीत थी। सारी सभा तब घोष से गूंज उठी।[25]

Estelar

मालवीय जी दान लेने के लिए रामपुर पहुँचे और उन्होंने नवाब के बगीचे में डेरा डाल दिया और अपनी एक लाख रूपये की माँग नवाब के पास भिजवायी। नवाब ने शर्त रखी कि महल में आइये, एक कप चाय पीजिए और दान ले जाइये। पर कट्टरपंथी भिखारी को यह स्वीकार नहीं हुआ। उन्होंने नित्य प्रति प्रातः सांय वहीं सभायें करके चन्दा एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया। नवाब रामपुर ने इसे अपना अपमान समझा और चुपचाप एक लाख रूपये का चेक मालवीय जी को भिजवा दिया।[26]

एक अनोखी व मनोरंजक घटना एक करोड़पति की है जिसे अपने व्यापार में भारी हानि हुई। वह मालवीय जी से परामर्श लेने पहुँचा। मालवीय जी ने उस व्यापारी से विश्वविद्यालय के लिए तत्काल पांच लाख रूपये दान में देने के लिए कहा। व्यापारी से अत्यन्त आश्चर्य के साथ प्रत्युत्तर दिया– ''आप यह क्या कह रहे हैं? मैं तो पहले ही भिखारियों की स्थिति में आ गया हूँ। मेरा व्यापार ठप्प हो गया है।'' मालवीय जी ने अत्यन्त शांत भाव से कहा– ''यदि आप मुझसे परामर्श मांग रहे हैं तो मानते क्यों नहीं?'' व्यापारी ने तत्काल पांच लाख का चैक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के नाम दे दिया। अगले ही दिन समाचार–पत्रों में जब उस व्यापारी की सहृदयता का ऐसा बखान हुआ कि उसकी साख पुनः जमा गई।[27]

एक अन्य घटना गुजरात प्रदेश की है, जब एक सेठ के पास मालवीयजी एक लाख प्राप्त करने के उद्देश्य से गये। वह जानता था कि मालवीयजी की वाणी में बड़ा जादू है और वह उन्हें टाल नहीं सकेगा। इसलिए उसने मिलने से इन्कार कर दिया। पर मालवीयजी हार मानने वाले नहीं थे। वे सेठ से मुलाकात करने का मौका तलाशते रहे। उन दिनों



Estelar

श्राद्ध चल रहे थे। मालवीयजी श्राद्ध कराने वाले अन्य ब्राह्मणों के साथ पुजारी के वेश में सेठ के घर गये। उस समय वे अपनी अचकन, तंग पायजामा और सिर पर सफेद पगड़ी के वेश में नहीं थे। सेठ ने उन्हें पहचाना नहीं। पूजा पाठ के बाद श्राद्ध भोजन का समय आया। मालवीयजी उसमें भी शामिल हुए। अब सब ब्राह्मणों को दक्षिणा देनी थी। सेठ को किसी प्रकार पता चल गया कि इन ब्राह्मणों में एक विशिष्ट ब्राह्मण मालवीयजी भी हैं। उन्हें देख वह हैरान भी हो गया और साथ में लज्जित भी। उसने मालवीयजी के चरणों में कोरा चैक रख दिया ताकि वे अपनी इच्छा से उसमें राशि लिख लें। मालवीयजी का संकल्प पूरा हो गया और वे लाख रूपये की राशि प्राप्त कर प्रसन्न हो गये। सेठ भी उनसे भरपूर आशीर्वाद प्राप्त कर सन्तुष्ट था।[28]

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए दिये गये दान में मुजफ्फरपुर (बिहार) के एक लकड़हारे व एक मेहतर द्वारा दिये गये दान की कथा भी उल्लेखनीय है। मालवीय जी द्वारा दिये गये भाषण से प्रभावित होकर उस लकड़हारे ने अपनी दस दिन की कमाई वहां दान दे दी तथा मेहतर ने नई सिली हुई कमीज भेंट कर दी। यह कमीज हिन्दू विश्वविद्यालय काशी संग्रहालय में आज भी मौजूद है।[29]

परन्तु इससे भी अधिक हृदयग्राही दृश्य बंगाली प्रोफेसर के घर पर दिखाई दिया। प्रोफेसर महोदय एक सभा में दान देकर आए थे। मालवीयजी उनको धन्यवाद देने के लिए उनके घर आए। प्रोफेसर की सतीसाध्वी दानशीला पत्नी ने भारत राष्ट्र के महान भिखारी को अपने द्वार आया देखकर अपने दोनों स्वर्ण कंगन हिन्दू विश्वविद्यालय को भेंट कर दिए। पति महोदय ने उनका नकद मूल्य देकर कंगन वापस पत्नी को वापस दे दिए। पर दानशीला भारतीय नारी ने वह दोनों कंगन पुनः



Estelar

महामना की झोली में डाल दिए। ये कंगन भी विश्वविद्यालय के संग्रहालय में सुरक्षित हैं।[30]

इसी का जिक्र करते हुए सेंट जोन्स कॉलेज (आगरा) के रसायन–विज्ञान के प्राध्यापक ने प्रिंस ऑफ बैगर्स (भिक्षुओं के राजा) शीर्षक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने कहा था– ''बहुत लोगों ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया है कि पिछले बीस वर्ष में भारत ने संसार को दो ही सर्वोच्च भिक्षुक दिये हैं जिनके सामने अन्य सब बौने ही जान पड़ते हैं, जैसे हिमालय के सामने अन्य सब पर्वत नगण्य जान पड़ते हैं। निःसंदेह उन दो में एक तो महात्मा गांधी हैं। हमारे ध्यान में उनके सिवा केवल एक ही व्यक्ति और है, जिसे उनकी बगल में बिठाया जा सकता है, और वे हैं पंडित मालवीय जी। प्रत्येक कला के आचार्य की भाँति उनका अपना अलग ढ़ंग और निराली पद्धति थी। वे छोटे आदमियों को परेशान नहीं करते थे, वरन् यह ध्यान रखते थे कि राजा, महाराजा, जगत्–सेठ और करोड़पति उनकी तरफ आकर्षित हों।''[31] इस भिक्षुक की विशेषता यह थी कि उस भिक्षा का एक पैसा भी इस व्यक्ति ने अपने पर खर्च नहीं किया।[32]

डॉ0 बेसेन्ट ने मालवीय जी की निष्ठा व अध्यवसाय की प्रशंसा करते हुए कहा था– ''मालवीय जी ने अपना समस्त सांसारिक जीवन, अपनी शक्ति, अपनी प्रबल भाषण कला, यहां तक कि स्वयं अपने को और अपने स्वास्थ्य को इस महान काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए बलिदान कर दिया है।''[33]

अन्ततः पण्डित मदन मोहन मालवीय जी के अथक प्रयासों से 4 फरवरी, 1916 को बसन्त पंचमी के दिन विश्वविद्यालय के शिलान्यास भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिंग के द्वारा किया गया । इस अवसर पर काशी में भारी महोत्सव मनाया गया। महोत्सव में न केवल देश



Estelar

के सभी गणमान्य व्यक्ति यथा सभी प्रान्तों के गर्वनर, रजवाड़ों के नरेश, सम्पूर्ण भारत के विद्वान, राजनीतिज्ञ, वकील, बैरिस्टर उपस्थित थे अपितु बंगाल, बिहार और संयुक्त प्रान्त के गर्वनर और विशेष रूप से महात्मा गांधी उपस्थित थे।[34] समारोह के आरम्भ में राष्ट्रगान हुआ तथा उसके पश्चात् सेन्ट्रल हिन्दू पाठशाला की कन्याओं ने गणपति और सरस्वती का स्तुति गान किया। महात्मा गांधी ने इस उद्घाटन अवसर पर कहा था– ''यदि हम ईश्वर में भरोसा रखते हैं और उससे डरते हैं तो फिर हमें किसी से डरने की जरूरत नहीं।''[35] इतने गणमान्य व्यक्ति तो शायद 1911 के शाही दरबार के अवसर पर भी उपस्थित नहीं हुए होंगे। इसका प्रमाण है कि स्वयं वायसराय ने अपने भाषण में स्वीकार किया कि आज जितनी संख्या में यहां विशिष्ट जन विद्यमान हैं, उससे अधिक विशिष्ट जनों में बोलने का मुझे कभी अवसर प्राप्त नहीं हुआ।[36]

वायसराय ने अपने अद्भुत भाषण में कहा– ''आज मेरे समक्ष उपस्थित महामहिमामय महानुभावों के बारे में मेरा विचार है कि यह सम्मेलन अति विशिष्ट है। ऐसे सम्मेलनों में मेरी उपस्थिति ज्यादा रही हो, मुझे स्मरण नहीं। इस सम्मेलन में बंगाल के राज्यपाल, पंजाब, बिहार और उड़ीसा के उपराज्यपाल, भारतीय राजाओं का अद्वितीय समूह और भारतीय कला और संस्कृति के चुने हुए प्रतिभावान दिव्य पुरूष उपस्थित हैं। क्या कारण है कि सुदूर प्रदेशों से इतने विशिष्ट व्यक्ति यहां एकत्रित हैं? वह कौन सा आकर्षण है, जो सभी को इस प्रबलता से प्रभावित कर रहा है? इसका उत्तर है यह मेरे समक्ष रखा हुआ संगमरमर का शिलाखण्ड। ऐसे शिलाखण्ड मैंने पिछले पांच सालों में कई स्थापित किये हैं। इस शिलाखण्ड की दृष्टिगोचर सरलता के अलावा इसका बहुत बड़ा महत्व है। इसके द्वारा भारत में शिक्षा के एक नये युग की सृष्टि हो रही है। भारतवर्ष



Estelar

के सभी श्रेष्ठ और सहृदय हिन्दुओं ने इसमें तीव्र रूचि उत्पन्न की है। यह आधार–शिला उस आदर्श पथ पर चलने का संकेत है, जिसने भारतीय कल्पनाओं का अन्दर तक मथ दिया है। इस विश्वविद्यालय ने अन्य शिक्षण संस्थाओं की अपेक्षा आवास की सुविधाएं देने के साथ शिक्षण की नई शैली को भी आयाम दिया है। इनके अतिरिक्त भी इसका विशेष महत्व है। यह कहना तो अनुचित होगा कि यह नवीन प्रणाली भारत के लिए वास्तव में ही नवीन है, क्योंकि इस प्रणाली को प्राचीन भारत में खोजा जा सकता है। उस प्राचीन भारत में जब वशिष्ठ और गौतम जैसे महान गुरूओं के पास सैकड़ों छात्र पढ़ने आते थे। भारतीय शिक्षा की विचारधारा आदिकाल से यही रही है कि शिष्य गुरू के पास पूर्ण श्रद्धा से उनकी वाणी और विद्वता से ज्ञान प्राप्त करने के साथ धर्म के सम्बन्ध में पथ–प्रदर्शन, आदेश और व्यवहार में अपना चरित्र निर्माण करने आते थे।''[37]

महामना मालवीय के द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।[38] इसकी नियमित स्थापना के बाद इसके परीक्षार्थियों का पहला दल सन् 1918 में परीक्षा में सम्मिलित हुआ।

इस विश्वविद्यालय की स्थापना का महत्व इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे व्यक्ति को इसके कुलपति होने का गर्व प्राप्त हुआ।[39] स्वयं मालवीय जी ने कई वर्षो तक उप–कुलपति[40], कुलपति व रेक्टर[41] के रूप में इसकी सेवा की।

मालवीय जी सार्वभौम धार्मिक सत्य और शाश्वत आदर्शों के अनुगामी थे। उनकी दृष्टि में भारतवर्ष केवल एक भौगोलिक परिधि या राजनीतिक लक्ष्य मात्र नहीं था वरन् आध्यात्मिक तत्व था, दैवी निधि थी जिसका आदर करना इस देश में जन्म लेने वालों का परम धर्म है। हिन्दुत्व किसी विशेष सम्प्रदाय द्वारा अनुपालित जीवन–पद्धति मात्र नहीं था वरन्



Estelar

सम्पूर्ण विश्व के मानव–मात्र को अपनी विशाल परिधि में अंकस्थ करने वाला दार्शनिक सिद्धान्त था, जिसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह धर्म, सत्य और मानवीय अधिकार की रक्षा के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान कर दे। इस प्रकार मालवीय जी का पूर्ण विश्वास सनातन धर्म में था। पंडित जी तन, मन और बाहरी वेशभूषा से शुद्ध भारतीय थे। परिवेश खद्दर, शरीर पर लम्बा अंगरखा, माथे पर तिलक और सिर पर खद्दर का सफेद सीधा–सादा साफा उनकी पहचान थी। मालवीय जी इन्हीं विचारों व सिद्धान्तों का समावेश काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में करने का सार्थक व सफल प्रयास किया।

पं0 मदन मोहन मालवीय का अपना कोई मौलिक शिक्षा दर्शन चिन्तन नहीं था। उनकी स्वीकारोक्ति है– ''मैं कोई शिक्षाशास्त्री नहीं हूँ।'' उनके शिक्षा दर्शन का विकास उनके शिक्षण कार्यो में देखा जा सकता है। अपने शिक्षा दर्शन को लिपिबद्ध न कर पाने के कारण सम्भवतः शिक्षा के प्रयोग पक्ष अर्थात् व्यावहारिक पक्ष में व्यस्तता थी। पंडित जी के अनुसार शिक्षा से अभिप्राय विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा है। मालवीय जी की शिक्षा का व्यावहारिक पक्ष अत्यन्त व्यापक है। यह संकीर्णता से रहित है व मनुष्य में मानवीय गुणों का समावेश कर उसे बहुआयामी प्रगति का मानदंड बनाती है।[42]

मालवीय जी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मानव मुक्ति है– 'सा विद्या या विमुक्तये।'[43] मदन मोहन मालवीय के शिक्षा के उद्देश्यों को अग्रांकित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है–

1. शिक्षा का सर्वप्रमुख उद्देश्य धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति के साधन शरीर की आरोग्य व स्वस्थ रखना है। उनके अनुसार शिक्षा द्वारा

मनुष्य को उचित आहार, शयन और बह्मचर्य का ज्ञान कराना चाहिए और तद्नुकूल आचरण में प्रशिक्षित करना चाहिए।

2. स्वयं मालवीय जी विभिन्न क्षेत्रों के ज्ञाता थे तथा उनका हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत व फारसी पर पूर्ण अधिकार था। अतः उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य भाषा व विभिन्न विषयों के ज्ञान द्वारा मनुष्य में विवेक का विकास करना है।

3. शिक्षा के द्वारा मनुष्य में सामाजिक मूल्यों यथा परसेवा की भावना का विकास होना चाहिए।

4. शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य मानव में सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों की स्थापना करना होना चाहिए। वे हिन्दू संस्कृति में परम विश्वास रखते थे, किन्तु वे पूर्ण सहिष्णुता पर सर्वाधिक जोर देते थे।

5. शिक्षा का उद्देश्य चरित्रवान व्यक्ति का निर्माण करना है जो आत्मनिर्भर हों।

6. मालवीय जी ने देश की गरीबी तथा बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए चार पुरूषार्थों में दूसरे पुरूषार्थ 'अर्थ' की प्राप्ति के लिए शिक्षा को माध्यम बनाया। इस हेतु उन्होंने कृषि, कला–कौशल एवं अन्य औद्योगिक शिक्षा व्यवस्था पर जोर दिया।

7. शिक्षा में प्राचीन साहित्य तथा संस्कृति के साथ आधुनिक शिक्षा का समन्वय होना चाहिए।

8. पण्डित जी के अनुसार परतन्त्र भारत में राजनीतिक जागरूकता का माध्यम शिक्षा ही है। शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्रीयता की भावना का विकास किया जाना चाहिए।

9. महामना मालवीय जी ने शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति करना परिलक्षित किया है।[44]

Estelar

यद्यपि मालवीय जी ने किसी विशेष शिक्षा पद्धति पर जोर नहीं दिया एवं उन्हें अपनी शिक्षा पद्धति को लिपिबद्ध करने का अवकाश भी प्राप्त नहीं हुआ तथापि पण्डित जी ने दीक्षान्त समारोहों में, वक्तव्यों और उपदेशों में अपने विचार व्यक्त किये हैं। जिनके आधार पर स्पष्ट होता है कि महामना मालवीय जी ने प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार शिक्षा विधियों का समर्थन किया है। जैसे– चिन्तन एवं विमर्श, उपदेश एवं व्याख्यान, शोध एवं अन्वेषण, क्रिया एवं अभ्यास, निरीक्षण व स्वाध्याय।

मदन मोहन मालवीय जी शिक्षा में आत्मानुशासन को विशेष महत्व देते थे। आत्म–नियन्त्रण व मन, वचन, कर्म की शुद्धता को वे शिक्षक व शिष्य दोनों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण मानते थे।

महामना भारतवर्ष के उत्कर्ष के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे। मालवीय जी का नारा था– हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान। हिन्दी अर्थात् संस्कृत गर्भित हिन्दी। चूंकि हिन्दी बहुसंख्यक वर्ग की भाषा थी, इसलिए इस भाषा को शिक्षा का माध्यम तथा राष्ट्रभाषा बनाने के वे सदैव पक्षधर रहे। परन्तु इतना होते हुए भी तात्कालिक परिस्थितियों (उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों की पुस्तकों की हिन्दी में अनुपलब्धता तथा हिन्दी भाषा में विज्ञान व तकनीकी शब्दावली का न होना) को देखते हुए उन्होंने यथा आवश्यकता अंग्रेजी को माध्यम बनाना स्वीकार किया।

महामना प्रगतिशील विचार के विद्वान व्यक्ति थे। अतः प्राचीन वर्ण व्यवस्था में विश्वास होते हुए भी इन्होंने शूद्रों को शिक्षा के अधिकार से वंचित नहीं किया। मालवीय जी ने शिक्षा को सभी मनुष्यों के जन्मजात अधिकार के रूप में स्वीकार किया। विशिष्ट शिक्षा को वे बच्चों की योग्यतानुसार देने के पक्षधर थे।

Estelar

पण्डित जी प्रगतिशील विचारों के समर्थक होने के साथ–2 किशोर मनोविज्ञान से भी परिचित थे। मदन मोहन मालवीय जी स्त्रियों का बड़े सम्मान से देखते थे तथा शिक्षा पर स्त्रियों का बराबर का अधिकार मानते थे। वे स्त्रियों को पुरूषों के समान शिक्षा के समान अवसर देने के पक्षधर थे। सहशिक्षा के विषय में मालवीय जी के विचार उन्नतोमुख व समयानुकूल थे। वे प्राथमिक तथा उच्च स्तर पर सहशिक्षा की अनुमति देते थे किन्तु माध्यमिक स्तर पर नहीं।

मालवीय जी के अथक प्रयासों का साकार रूप बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय भारत के प्राचीनतम विश्वविद्यालयों में से एक है।[45] वर्तमान में भारत का एक प्रमुख केन्द्रीय विश्वविद्यालय[46] है। विश्वविद्यालय का क्षेत्रफल, भवनों की रचना, विभागीय व्यवस्था तथा शान्त वातावरण शिक्षा के लिए आदर्श वातावरण प्रस्तुत करने वाला हैं।[47] काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर का मनोहारी दृश्य 1300 एकड़ भू–क्षेत्र में फैला हुआ है जो अपने आकर्षक वास्तुकला वाले स्मारकों, विशाल परिसर, हरे–भरे मैदानों व वृक्षों से आच्छादित शानदार पथों द्वारा संस्थापक महामना मालवीयजी का व्यापक कल्पनाशक्ति एवं दूरदर्शिता का परिचायक है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का राजीव गांधी दक्षिणी परिसर, 2600 एकड़ भू–क्षेत्र में फैला हुआ है, जो मुख्य परिसर से लगभग 80 किमी0 दूर बरकछा (मिर्जापुर) में स्थित है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्राच्य एवं पारम्परिक विषयों से लेकर आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तक के सभी शैक्षणिक विषयों में शिक्षण एवं अनुसन्धान एक ही परिसर में स्थित होना इसकी अद्भुत पहचान है। विश्वविद्यालय की एक विशिष्टता यह भी है कि यहाँ छात्रों, शिक्षकों एवं सहयोगी कर्मचारीगण एक साथ रहकर अपने शैक्षणिक लक्ष्यों के लिए शिक्षण एवं गुरूकुल पद्धति को अपनाते हैं। यह

Estelar

विश्वविद्यालय स्वयं में एक नगरीय व्यवस्था है जिसके पास अपने सभी सम्बन्धितों एवं आवासियों की आवश्यकताओं को सुलभ कराने, संचालित करने एवं अनुरक्षण के लिए इसकी अपनी स्वयं की सेवा एवं सहायक प्रणाली विद्यमान है।[48]

वर्तमान में इस विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना निम्न प्रकार है–

1. विश्वविद्यालय में दो परिसर हैं – मुख्य व दक्षिणी परिसर
2. विश्वविद्यालय में निम्न संस्थानों का प्रबन्ध किया जाता है–
   - ❖ चिकित्सा विज्ञान संस्थान
   - ❖ प्रौद्योगिकी संस्थान
   - ❖ कृषि विज्ञान संस्थान
   - ❖ पर्यावरण एवं संपोष्य विज्ञान संस्थान
3. विश्वविद्यालय में 16 संकाय हैं–
   - ➢ आधुनिक औषधि
   - ➢ आयुर्वेद
   - ➢ दन्त चिकित्सा
   - ➢ अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी
   - ➢ कृषि
   - ➢ पर्यावरण और संपोष्य विकास
   - ➢ कला
   - ➢ वाणिज्य
   - ➢ शिक्षा
   - ➢ विधि
   - ➢ प्रबन्ध शास्त्र

Estelar

- ➢ मंच कला
- ➢ संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान
- ➢ विज्ञान
- ➢ सामाजिक विज्ञान
- ➢ दृश्य कला

**4.** विश्वविद्यालय 5 अन्तर्विषयी स्कूलों से मिलकर बना है–

- द्रव्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
- जैव–चिकित्सकीय अभियांत्रिकी
- जैव–रसायन अभियांत्रिकी
- जैव–प्रौद्योगिकी
- जीवन विज्ञान

**5.** नगर में स्थित 4 महाविद्यालयों को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के लिए स्वीकृत किया गया है–

- ✓ आर्य महिला डिग्री कॉलेज
- ✓ डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज
- ✓ वसन्त कन्या महाविद्यालय
- ✓ वसन्त कॉलेज फॉर वुमेन

**6.** काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा बच्चों के तीन स्कूलों का अनुरक्षण किया जाता है–

- सेन्ट्रल हिन्दू ब्यॉयज
- सेन्ट्रल हिन्दू गर्ल्स
- रनवीर संस्कृत विद्यालय

Estelar

**7.** विश्वविद्यालय में 132 विभाग, 1 महिला महाविद्यालय भी है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अनेक विभाग अपनी शोध उपलब्धियों के लिए उच्चीकृत किये गये हैं। इनमें 18 यू0जी0सी0 विशेष सहायता कार्यक्रम में सम्मिलित हैं।

**8.** विश्वविद्यालय सभी प्रकार के स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर के शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु प्रस्ताव आमंत्रित करता है, जिसमें प्राचीन भारतीय विषयों जैसे वेद, ज्योतिष, धर्मागम, आयुर्वेद इत्यादि से लेकर आधुनिक विषयों जैसे औषधि, शल्य, जैव प्रौद्योगिकी, बायोइन्फार्मेटिक्स, जैव चिकित्सा, जैव रसायन, संगणक विज्ञान एवं अन्य विज्ञान विषयों, कृषि, अभियान्त्रिकी, प्रबन्धन इत्यादि विभिन्न विभागों तक सम्मिलित हैं। यह देश का तत्कालीन प्रथम विश्वविद्यालय था जहाँ देश में प्रौद्योगिकी की आधुनिक शिक्षा प्रारम्भ हुई थी।[49] विभिन्न विषयों में डाक्टरल एवं पोस्ट डॉक्टरल पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इसके साथ ही अनेक विषयों जैसे रोजगारपरक विषयों, मांग आधारित तथा रोजगार आधारित विषयों में अनेक डिप्लोमा कार्यक्रम भी उपलब्ध हैं। [50]

दुनिया के सबसे पुराने लगातार बसे हुए शहरों में से एक बनारस[51] में स्थित काशी हिन्दू विश्वविद्यालय महामना मदन मोहन मालवीय की अक्षय यशोगाथा की प्रतिमूर्ति है।[52] यह विश्वविद्यालय उनकी दूरदर्शिता, शैक्षिक विचारों और भारतीय संस्कृति के प्रति जुनून के रूप में खड़ा है।[53] इस विश्वविद्यालय का कुल गीत अग्र प्रकार है–

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
ग्रह तीन लोकों से न्यारी काशी, सुज्ञान धर्म और सत्यराशी।।
बसी है गंगा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी।



Estelar

नये नहीं हैं ये ईंट पत्थर, है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर।।
रचे हैं विद्या के भव्य मंदिर, यह सर्वसृष्टि की राजधानी।
यहाँ की है पवित्र शिक्षा, कि सत्य पहले फिर आत्म–रक्षा।।
बिके हरिशचन्द्र थे यहीं पर, यह सत्यशिक्षा की राजधानी।
वह वेद ईश्वर की सत्यवानी, बनें जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी।।
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्म–विद्या की राजधानी।
वह मुक्तिपद को दिलानेवाले, सुधर्मपथे पर चलानेवाले।।
यहीं फले–फूले बुद्ध, शंकर, यह राज ऋषियों की राजधानी।
सुरम्य धाराएँ वरूणा अस्सी, नहाए जिनमें कबीर तुलसी।।
भला हो कविता का क्यों न आकार, यह वागविद्या की राजधानी।
विविध कला अर्थशास्त्र गायन, गणित खनिज औषधि रसायन।।
यह मालवीय जी की देशभक्ति, यह कर्मवीरों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।।[54]

भारत के युग प्रवर्तक, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में पं0 मदन मोहन मालवीय के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों का विवेचन करने के पश्चात् इस बात का भी अध्ययन करना आवश्यक है कि महामना मदन मोहन मालवीय के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा–पद्धति में किस सीमा तक प्रासंगिक है।

अतः इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्याय में पं0 मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक एवं दार्शनिक विचारों की वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रासंगिकता के विषय में अध्ययन करने का प्रयास किया है जिसका वर्णन अग्रलिखित हैः–

Estelar

**1. शिक्षा के उद्देश्यों के सन्दर्भ में प्रासंगिकताः–**

पं0 मदन मोहन मालीवय के अनुसार केवल पुस्तक रट लेना और परीक्षा में अच्छे अंकों की प्राप्ति करना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। उन्होंने शिक्षा के जिन उद्देश्यों का निर्धारण किया था वे इस प्रकार हैं– नैतिकता तथा चरित्र का विकास, शारीरिक विकास, देशभक्ति तथा राष्ट्रीयता का विकास, सेवा धर्म का विकास, व्यावसायिक तथा आर्थिक विकास, भारतीय संस्कृति की महानता का ज्ञान, भारतीय संस्कृति का संरक्षण, स्वास्थय शिक्षा।

मालवीय जी ने इसके लिए छात्रों में सदाचारिता, ब्रह्मचर्य, सत्यवादिता तथा संयमी होने पर बल दिया था। इसीलिए उन्होंने पाठ्यक्रम में वेद, पुराण, स्मृति, भगवद्गीता, रामचरितमानस, महान् पुरूषों की जीवनियाँ, कहानियाँ, धार्मिक पुस्तकों, धर्म–दर्शन को शामिल करने पर बल दिया।

सच्ची शिक्षा इसमें नहीं कि बच्चों को अक्षरों का ज्ञान करा दें। सच्ची शिक्षा तो बच्चों के नैतिक विकास तथा चरित्र निर्माण में है। वर्तमान भारतीय शिक्षा में नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा की पूर्णतया अवहेलना की गयी है। जिसके कारण आज चारों ओर अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, पारस्परिक संघर्ष, असन्तोष तथा चारित्रिक पतन आदि बुराइयाँ देखने को मिल रही हैं जिससे मनुष्य अनिश्चितता की ओर बढ़ रहा है। मालवीय जी ने धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की सिफारिश की।

आधुनिक समय में छात्र उत्तीर्ण होने के लिए पुस्तकों को रटने में लगे रहते हैं जिससे वे शारीरिक व्यायाम की पूर्ण अवहेलना करते हैं। समय बचने पर कम्प्यूटर गेम खेलते हैं और टेलीविजन देखते हैं।

Estelar

जिससे शरीर स्वस्थ नहीं रह पाता है और बीमारियों का घर बन जाता है। इस दोष को दूर करने के लिए महामना मालवीय जी ने पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा एवं खेलकूद को पाठ्यक्रम के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में स्थान प्रदान किया था। उन्होंने इसके लिए सही आहार, सही शयन व ब्रह्मचर्य पर बल दिया।

भारत विभिन्नताओं का देश है। इसमें अनेक जातियाँ, धर्म, भाषाएं आदि देखने को मिलती हैं परन्तु विभिन्नताओं के होते हुए भी भारत की राष्ट्रीय एकता खतरे में पड़ गयी है क्योंकि अलग–अलग धर्म, जाति, रीति–रिवाज, भू–भाग, संस्कृति के होने के कारण समाज छोटे–छोटे टुकड़ों मे बँट गया है।

मालवीय जी ने इस स्थिति को पहचानते हुए राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता पर बल दिया था उनका कहना था कि "प्रगाढ़ देशभक्ति से एकता उत्पन्न होती है एकता से राष्ट्रीयता का भाव और राष्ट्रीयता के भाव से देश की उन्नति होती है।" अतः वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो लोगों की मानसिकता को व्यापक बनाये जिससे लोगों मे आपस में प्रेम बना रहे तथा देशभक्ति की भावना उत्पन्न हो।

वही शिक्षा सार्थक है जो व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन में काम आ सके। आज की शिक्षा व्यक्ति को केवल किताबी ज्ञान देती है जिसका व्यक्ति के व्यावहारिक जीवन से कहीं भी सम्बन्ध नहीं है। अतः जब छात्र शिक्षा पूरी करता है तो आगे के जीवन में भटकता ही रहता है। उसे आज तक अर्जित किया गया ज्ञान निरर्थक लगता है जिससे व्यक्ति में हताशा उत्पन्न होती है। देश की प्रगति नहीं होती है।

Estelar

मालवीय जी ने इस दोष को देखते हुए शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा को महत्व दिया जिससे व्यक्ति का जीविकोपार्जन हो सके तथा देश का आर्थिक विकास भी हो सके।

युवा वर्ग जो पढ़ा लिखा एवं आधुनिक तकनीकी व विज्ञान का ज्ञाता है वह अपनी संस्कृति से दूर होता जा रहा है क्योंकि उसे अपनी संस्कृति में रूढ़िवादिता, कट्टरपन व अंधविश्वास नजर आता है और वह पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण कर रहा है।

इसके निवारण के लिए मालवीय जी ने अर्वाचीन विषयों के साथ–2 प्राचीन संस्कृति का ज्ञान भी आवश्यक माना है। जिससे छात्र अपनी संस्कृति की महानता को समझ सकें एवं उसके प्रशंसनीय पहलुओं का अनुकरण कर सकें। इसके लिए उन्होंने इसे पाठ्यक्रम में स्थान प्रदान कर इसका अध्ययन अनिवार्य करने की अनुशंसा की जिससे भारतीय संस्कृति की रक्षा हो सके।

अतः इस प्रकार स्पष्ट होता है कि यदि हमें वर्तमान शिक्षा के दोषों को दूर करना है तो मालवीय जी के शिक्षा के उद्देश्यों के अनुरूप ही अपनी वर्तमान शिक्षा के उद्देश्यों को बनाना होगा तभी हम सच्ची शिक्षा की प्राप्ति कर पाएंगे।

**2. शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में प्रासंगिकताः–**

मालवीय जी ने अपने शिक्षा–दर्शन में इन शिक्षण विधियों के प्रयोग पर बल दिया। क्रिया व अभ्यास विधि, चिन्तन एवं मनन विधि, उपदेश एवं भाषण विधि, शोध एवं अन्वेषण विधि, प्रयोग विधि।

क्रिया व अभ्यास विधि में बालकों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनवरत रूप से सक्रिय रहना पड़ता है और इस विधि द्वारा वे जो

Estelar

ज्ञान प्राप्त करते हैं वह अधिक व्यावहारिक होने के कारण इसका प्रयोग गणित व विज्ञान जैसे कठिन विषयों को समझने के लिए करते हैं।

चिन्तन व मनन विधि से तात्पर्य अर्जित ज्ञान का मन ही मन में विश्लेषण करके आत्मसात् करना है जिससे ज्ञान स्थायी हो जाय। इस विधि से केवल पाठ्यवस्तु याद ही नहीं होती बल्कि उसके मूल तत्व को समझा जा सकता है। इसलिए इसका प्रयोग वैदिक काल मे वेदों, पुराणों, ब्राह्मण ग्रन्थों को समझने के लिए किया जाता था।

उपदेश अथवा व्याख्यान विधि से तात्पर्य अध्यापक की उस क्रिया से है जिसके द्वारा बालकों को यह बताया जाता है कि क्या सही है क्या गलत है अर्थात् शिक्षक बालकों मे सद्गुणों का विकास करने का प्रयत्न करता है। इस विधि का प्रयोग उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों को पढ़ाने में भी किया जाता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाला छात्र परिपक्व हो जाता है इसलिए अध्यापक समय की बचत करते हुए पाठ्यवस्तु को पूरा कर सकता है।

शोध व अन्वेषण विधि से तात्पर्य है स्वयं खोज करके नया ज्ञान प्राप्त करना। यह विधि सबसे अधिक प्रभावशाली तथा मनोवैज्ञानिक है। इसमें छात्र की तर्कक्षमता तथा निरीक्षण क्षमता का विकास होता है। छात्र में आत्मविश्वास तथा आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होता है। छात्र के स्वयं प्रयासों द्वारा प्राप्त ज्ञान अधिक समय तक याद रहता है।

प्रयोग विधि से तात्पर्य है किसी बात की प्रामाणिकता की स्वयं जाँच करना। यदि सही पायी जाए तो उस पर विश्वास करना। यह विधि विज्ञान, कौशल, उद्योग जैसे विषयों के शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि यदि मालवीय जी द्वारा बतायी गयी शिक्षण विधियों की प्रयोग छात्रों की उम्र एवं कक्षा के अनुसार

Estelar

हो तो यह वर्तमान शिक्षा पद्धति के लिए वरदान सिद्ध होगी। इनके प्रयोग से शिक्षण को प्रभावशाली, रूचिकर व सरल बनाया जा सकेगा।

**3. शिक्षा के माध्यम के सन्दर्भ में प्रासंगिकताः–**

मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति उसी भाषा में सरलता से कर सकता है जो वह अपनी बाल्यावस्था से सुनता व बोलता आ रहा है। इस धारणा को ध्यान में रखते हुए मालवीय जी ने मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाया क्योंकि शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रजी भाषा को अपनाने से छात्र में विषय के प्रति रूचि उत्पन्न नहीं होगी। वह अपने विचारों की अभिव्यक्ति स्वतंत्रतापूर्वक नहीं कर पायेगा तथा उसे विषय भी कठिन लगेगा।

'मातृभाषा की शिक्षा के पूर्व विदेशी शिक्षा का ज्ञान कराना उतना ही विवेरहित है जितना बच्चे को चलने से पूर्व चढ़ना सिखाना।'

———कामेनियस

इन्हीं कारणों से मालवीय जी ने हिन्दी की वकालत की क्योंकि मातृभाषा अन्य सभी विषयों के ज्ञानोपार्जन का आधार होती है। यह सरलतम भाषा होती है। इसके पढ़ने से अभिरुचि जाग्रत होती है।

आवश्यकता इस बात की है कि बालक की सभी क्षमताओं के विकास के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति में बदलाव लाना होगा। अंग्रजी के स्थान पर हिन्दी या क्षेत्रीय भाषा को माध्यम के रूप में अपनाया जाए। बालक का जब अपनी मातृभाषा पर पूर्ण अधिकार हो जाएगा तभी उसे अन्य विदेशाी भाषाओं में शिक्षा दी जाय।

**4. पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में प्रासंगिकताः–**

पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में मालवीय जी का दृष्टिकोण बहुत व्यापक था। उन्होंने पाठ्यक्रम में उन सभी विषयों को सम्मिलित किया



Estelar

जिनके अध्ययन से आध्यात्मिक उन्नति के साथ–साथ भौतिक उन्नति भी हो। दूसरे शब्दों में पाठ्यक्रम में प्राचीन व अर्वाचीन ज्ञान का मिश्रण हो। जिससे संस्कृति के संरक्षण के साथ–2 राष्ट्र का विकास भी हो सके।

उन्होंने पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों का समावेश करने पर जोर दिया जो जीवनोपयोगी हो जिससे व्यक्ति व देश दोनों की आवश्यकता की पूर्ति हो सके। इसके लिए उन्होंने कौशल एवं उद्योग विषय, चिकित्सा, कानून, व्यावसायिक प्रशिक्षण को पाठ्यक्रम में स्थान दिया। उन्होंने बालक के शारीरिक विकास को भी महत्वपूर्ण मानते हुए पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा पर भी बल दिया।

इसके अलावा उन्होंने आध्यात्मिक उन्नति के लिए पाठ्यक्रम में धर्म, दर्शन, साहित्य, संस्कृति, विचारों की शिक्षा को भी शामिल किया। इसके साथ ही ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक बताया। इसके लिए उन्होंने रामायण, गीता, वेद, उपनिषदों के अध्ययन की सिफारिश की।

लौकिक उन्नति के लिए उन्होंने पाठ्यक्रम में भौतिक, रसायन, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, कृषि, कला, संगीत आदि विषयों को पाठ्यक्रम में स्थान दिया।

अन्य विषयों के साथ–2 वे स्त्रियों के लिए गृह–प्रबन्ध, स्वास्थय विज्ञान, बाल–मनोविज्ञान, संगीत–शास्त्र आदि ऐसे विषयों को सम्मिलित करने के पक्षधर थे जिससे वे कुशल गृहणी बन सकें।

अतः वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मालवीय जी के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचारों को अपनाकर स्वयं में निखार ला सकती है।

**5. अनुशासन के सन्दर्भ में प्रासंगिकताः–**

मालवीय जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस पर कहा था– "जीवन और प्रकाश को जो केन्द्र स्थापित होने जा



Estelar

रहा है उससे केवल ऐसे छात्र ही नहीं निकलेंगे जो बुद्धि में विश्व के अन्य भागों से श्रेष्ठ छात्रों के समान होंगे अपितु जो सदाचार और अनुशासनपूर्ण जीवन वहन करने और अपने देश से स्नेह करने में भी प्रशिक्षित होंगे।"

मालवीय जी का मानना था कि जीवन के किसी क्षेत्र में सफल होने के लिए स्व–अनुशासन आवश्यक है। अतः उन्होंने कठोर दण्डात्मक अनुशासन के स्थान पर स्व–अनुशासन पर बल दिया। इस अनुशासन के लिए मालवीय जी मन, वचन तथा कर्म के नियन्त्रण पर बल देते थे। छात्र कठोर दण्ड से उद्दण्ड हो जाते हैं इसलिए उन्होंने छात्रों को सादा जीवन–उच्च विचार के सिद्धान्त पर चलते हुए आत्मानुशासन द्वारा संयमित जीवन जीने पर बल दिया।

उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वर्तमान समय में शिक्षा में अनुशासनहीनता की समस्या के समाधान के लिए मालवीय जी के अनुशासन सम्बन्धी विचारों को भारतीय शिक्षा में स्थान दिया जाय।

**6. स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में प्रासंगिकताः–**

मालवीय जी पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों की शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते थे क्योंकि वे ही भावी सन्तति की माता हैं। उन्होंने स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में सराहनीय काम किया। उनके अनुसार समाज में अन्धविश्वास और बुराइयों का विनाश तभी सम्भव है यदि स्त्रियां सुशिक्षित तथा गुणवती हों।

उन्होंने स्त्रियों के लिए शिशु–पालन, परिवार–कल्याण, गृह–प्रबन्ध, स्वास्थय विज्ञान, बाल–मनोविज्ञान, संगीत आदि की शिक्षा पर बल दिया तथा बालिकाओं को अधिक से अधिक संख्या में शिक्षित करने के लिए कन्या विद्यालय खोलने की वकालत की।

वर्तमान में स्त्री शिक्षा के मार्ग में तमाम कठिनाइयाँ हैं जैसे बालिकाओं के लिए उचित पाठ्यक्रम का न होना, कन्या विद्यालयों का



Estelar

अभाव, बालिका शिक्षा के प्रति लोगों का रूढ़िवादी होना तथा बालिकाओं को दिये जाने वाले ज्ञान का उनके व्यावहारिक जीवन में उपयोगी न होना।

अतः उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि वे महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। मालवीय जी के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचारों को वर्तमान शिक्षा पद्धति में स्थान देकर उसकी प्रासंगिकता बढ़ाई जा सकती है।

**7. व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकताः–**

मालवीय जी का विचार था कि शिक्षा ऐसी हो जो व्यावहारिक जीवन में उपयोगी हो जिससे अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद व्यक्ति अपनी जीविका कमा सके। इससे व्यक्ति के साथ–साथ देश का आर्थिक विकास भी होगा। मालीवय जी का विचार था कि प्रत्येक बालक को उसकी रूचि के अनुसार किसी न किसी प्रकार की व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

इसके लिए उन्होंने महत्वपूर्ण वैज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद कराया तथा पाठ्यक्रम में अभियान्त्रिकी, कृषि, चिकित्सा, प्रौद्योगिकी, विधि, शिक्षण–प्रशिक्षण, चीनी मिट्टी के बर्तन, खिलौने, साबुन, तेल बनाना, चित्रकारी, ज्योतिष, टाइप राइटिंग इत्यादि आदि को शामिल करने का प्रयास किया।

अतः उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट है कि वर्तमान भारतीय शिक्षा–पद्धति में मालवीय जी के व्यावसायिक शिक्षा सम्बन्धी विचार अत्यन्त उपयोगी हैं जिससे बेरोजगारी के संकट से निपटा जा सकता है।

**8. धार्मिक और नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में प्रासंगिकताः–**

"मैं आशा करता हूँ कि धार्मिक शिक्षा के सम्बन्ध में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का सुन्दर प्रभाव समीप व दूर की अन्य संस्थाओं पर भी पड़ेगा और कुछ वर्षो में ही सरकार द्वारा समर्थित विद्यालयों और



Estelar

महाविद्यालयों में धार्मिक शिक्षा को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बना दिया जाएगा।

———पं0 मदन मोहन मालवीय

मालवीय जी का विचार था कि व्यक्तियों को सभी धर्मों को सम्मान देना चाहिए। जातिवाद, क्षेत्रवाद आदि कुरीतियों से दूर रहना चाहिए। परमात्मा सबके हृदयों मे व्याप्त है इसलिए जितने प्राणियों को प्रसन्न करें ईश्वर उतना ही गुना प्रसन्न होगा।

मालवीय जी धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा में विश्वास करते थे। वे इस बात पर बल देते थे। वे इस बात पर बल देते थे कि प्रत्येक प्राणी को मन, वचन तथा कर्म व व्यवहार से पवित्र होना चाहिए। वे चारित्रिक गुणों के विकास के लिए नैतिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि विद्वता के साथ नैतिकता का सामंजस्रू आवश्यक है।

मालवीय जी के अनुसार सदाचारी व्यक्ति वह है जिसमें निम्न गुण उपस्थित हैं– परोपकार, दया, क्षमा, सेवा, त्याग, सहानुभूति। उनके अनुसार गुणों की प्राप्ति में धर्म तथा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से सहायता मिलती है। नैतिक शिक्षा तथा धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन से व्यक्ति का चारित्रिक तथा नैतिक पतन नहीं होगा।

"मैं यह कहने का साहस कर सकती हूँ कि आज पण्डित मदन मोहन मालवीय जी मत–भिन्नता में भी भारतीय एकता के प्रतीक हैं।"

——ऐनी बेसेन्ट

उपरोक्त विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि मालवीय जी के धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा सम्बन्धी विचारों को वर्तमान शिक्षा पद्धति

Estelar

में अवश्य शामिल किया जाना चाहिए क्योंकि इससे धर्म के नाम पर होने वाले दंगे–फसाद को रोका जा सकेगा।

पण्डित जी के इन कृत्यों की महत्ता को स्वीकार करते हुए ही भारत सरकार ने मालवीय जी के जन्म दिवस के अवसर पर 25 दिसम्बर 2014 को इन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार भारत रत्न से अलंकृत करने की घोषणा की है।[55] निष्कर्षतः पण्डित मदन मोहन मालवीय अपने आपमें एक महान संस्थान थे जिन्होंने अपना सर्वस्व भारत भूमि के विकास तथा उन्नति के हित में समर्पित कर दिया। भारतीय संस्कृति के प्रश्रय[56] इस महामना के श्री चरणों में कोटिशः नमन्।

Estelar

## सन्दर्भ:-


1. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 1, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 1996
2. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 43, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012
3. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 18, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण भारत सरकार, वर्ष 1996
4. शर्मा, चतुर्वेदी द्वारकाप्रसाद, चरित्र कोश, पृष्ठ 346, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, वर्ष 1983
5. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 19, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 1996
6. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 23, वर्ष 1989
7. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 65, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012
8. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 64, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006
9. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 87, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996
10. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 103, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, वर्ष 2008
11. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 60, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 1996
12. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 87, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996


Estelar

13. चन्द्रा, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, पृष्ठ 221, ओरियंट ब्लैकस्वॉन, वर्ष 2008

14. राजस्वी, एम0आई0, पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 51, मनोज पब्लिकेशन्स, वर्ष 2013

15. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 68–70, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

16. पूर्वोक्त, पृष्ठ 64–66

17. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 88, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996

18. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 26, वर्ष 1989

19. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 88, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996

20. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 79–80, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

21. राजस्वी, एम0आई0, पं. मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 58, मनोज पब्लिकेशन्स, वर्ष 2013

22. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 91, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996

23. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 72–74, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

24. कौशिक, अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 110, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, वर्ष 2008

25. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 25–26, वर्ष 1989

26. अस्थाना, डॉ0 शिवकुमार, प्रातः स्मरणीय राजनेता भाग–2, पृष्ठ 92, लोकहित प्रकाशन लखनऊ, वर्ष 1996

Estelar

27. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 75–76, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

28. गोयल, गीतिका, आओ सीखें ज्ञान की बातें, पृष्ठ 22, ग्लोबल विजन पब्लिशर्स नई दिल्ली, वर्ष 2009

29. पूर्वोक्त, पृष्ठ 50

30. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार, महामना मदन मोहन मालवीय, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 26, वर्ष 1989

31. आचार्य, पं0 श्रीराम शर्मा, धर्मप्राण–महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी, पृष्ठ 19, युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, वर्ष 2015

32. शर्मा, विश्वमित्र, बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय, पृष्ठ 26, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, वर्ष 2007

33. चतुर्वेदी, सीताराम, आधुनिक भारत के निर्माता मदनमोहन मालवीय, पृष्ठ 67, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, वर्ष 1996

34. मित्तल, डॉ0 महेन्द्र, आधुनिक भारत के महानतम भारतीय, पृष्ठ 20, ग्लोबल हारमनी पब्लिशर्स, वर्ष 2011

35. चतुरसेन, आचार्य, लौह पुरूष बापू, पृष्ठ 133–134, पी0एन0 प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2000

36. कौशिक अशोक, भारत के महान अमर क्रान्तिकारी मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 111, डायमण्ड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0 नई दिल्ली, वर्ष 2008

37. शर्मा, चेतन, मदन मोहन मालवीय, पृष्ठ 76–77, सीमा पब्लिशिंग हाऊस, वर्ष 2006

38. पचौरी, डॉ0 हरदेव, जानिए भारत को, पृष्ठ 54, खुराना एण्ड सन्स दिल्ली, वर्ष 2010

39. शर्मा, विश्वमित्र, बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय, पृष्ठ 26, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, वर्ष 2007

40. नागौरी, डॉ0 एस. एल. एवं नागौरी, कान्ता, भारतीय स्वतंत्रता सेनानी कोश, पृष्ठ 73, मलिक एण्ड कम्पनी जयपुर, वर्ष 2010

Estelar

41. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 64, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012

42. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, विश्व के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 267, कृतिका बुक्स दिल्ली, वर्ष 2009

43. उपरोक्त, पृष्ठ 268

44. सिंह, डॉ. राजेश, भारत के महान शिक्षा विचारक, पृष्ठ 65, कुमार एण्ड सन्स, वर्ष 2012

45. Keshavan, Dr. B, What went wrong and how to set them right, page 138, Universal publisher & distributors, Bangalore, Year 2007

46. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, विश्व के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 267, कृतिका बुक्स दिल्ली, वर्ष 2009

47. सिंह, रामबचन, वाराणसी (एक परम्परागत नगर), भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी, वर्ष 1973

48. www.bhu.ac.in/hindi/into.html

49. मिश्र, राजेन्द्र एवं तिवारी, प्रहलाद, विश्व के शिक्षाशास्त्री, पृष्ठ 277, कृतिका बुक्स दिल्ली, वर्ष 2009

50. www.bhu.ac.in/academic/academic.php

51. Lahiri, Manosi, Mapping India, page 144, Niyogi books, New Delhi, Year 2012

52. चतुरसेन, आचार्य, भारत रत्न, पृष्ठ 32, विज्ञान प्रगति प्रकाशन दिल्ली, वर्ष 2013

53. Sharma, Anuradha, Indian freedom fighters, Page 169, Kumar Publication House, Year 2013

54. पाण्डेय, डॉ0 विश्वनाथ, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पंडित मोहन मालवीय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी, वर्ष 2006

55. en.wikpedia.org/wiki/Madan_Mohan_Malaviya

56. शर्मा, विश्वमित्र, बीसवीं सदी के 100 प्रसिद्ध भारतीय, पृष्ठ 27, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, वर्ष 2007

Estelar